

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

संजीवनी विद्या का विस्तार: 21वीं सदी का उज्ज्वल ब्लूप्रिंट

मूर्च्छना से देवमानव तक की यात्रा — एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक कार्ययोजना
(अध्याय 1-4 का सार-संक्षेप)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वर्तमान स्कूली शिक्षा (साक्षरता)

आजीविका और नौकरी पाना

पुस्तकों को रटना और
स्मृतियों का बोझ

अवांछनीयता, स्वार्थ
और उद्विग्नता

केवल सीमित छात्रों तक

लक्ष्य

प्रणाली

परिणाम

दायरा

संजीवनी विद्या (सच्ची मेधा)

व्यक्तित्व का समग्र परिष्कार

प्रत्यक्ष उदाहरण और
प्रेरणाप्रद माहौल

समस्या-समाधान, विवेक
और देवमानव का निर्माण

विश्व के 600 करोड़ मनुष्यों
का नव-निर्धारण



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समस्या

600 करोड़ मनुष्यों तक
पहुँचने की चुनौती।

विद्यालय व पारम्परिक
ढाँचे अपर्याप्त।

समाधान

युगसाहित्य
(क्रान्तिधर्मी साहित्य)

सस्ते मूल्य पर, स्थानीय
भाषाओं में अनुवादित
सुव्यवस्थित विचारों की प्रदर्शनी।

परिणाम

घर-घर में युगचेतना
का संचार।

बिना करोड़ों रुपये और
सौ वर्ष की प्रतीक्षा के,
तत्काल प्रभाव।

युगसाहित्य का सृजन कोई विकल्प नहीं,
बल्कि नवसृजन का प्रत्यक्ष और अनिवार्य कार्य है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



न्यूनतम 20 पैसे
नित्य का अंशदान



2 घंटे का
समयदान



एक सशक्त ज्ञानघट
और जाग्रत परिवार



यह सूक्ष्म निवेश एक युग-शिल्पी को बिना किसी बाहरी
आर्थिक दबाव के ‘विद्या-विस्तारक’ बना देता है।

THE CYCLE OF DISTRIBUTION

(झोला पुस्तकालय तंत्र)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच
आप सबसे कहियेगा — सब
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप

पड़ोसियों को बाँटें

‘झोला पुस्तकालय’ योजना।
बिना मूल्य घर-घर पुस्तकें
पहुँचाना, पढ़ लेने पर वापस
लेना और नई देना।

अखण्ड-ज्योति का सूत्र:
1 पत्रिका = 5 पाठक

स्वयं पढ़ें

खरीदे गए नए
युगसाहित्य का
स्वाध्याय।

“मेरा ज्ञान शरीर ही

जन-जन के बीच में

पहुँचना ही चाहिए और

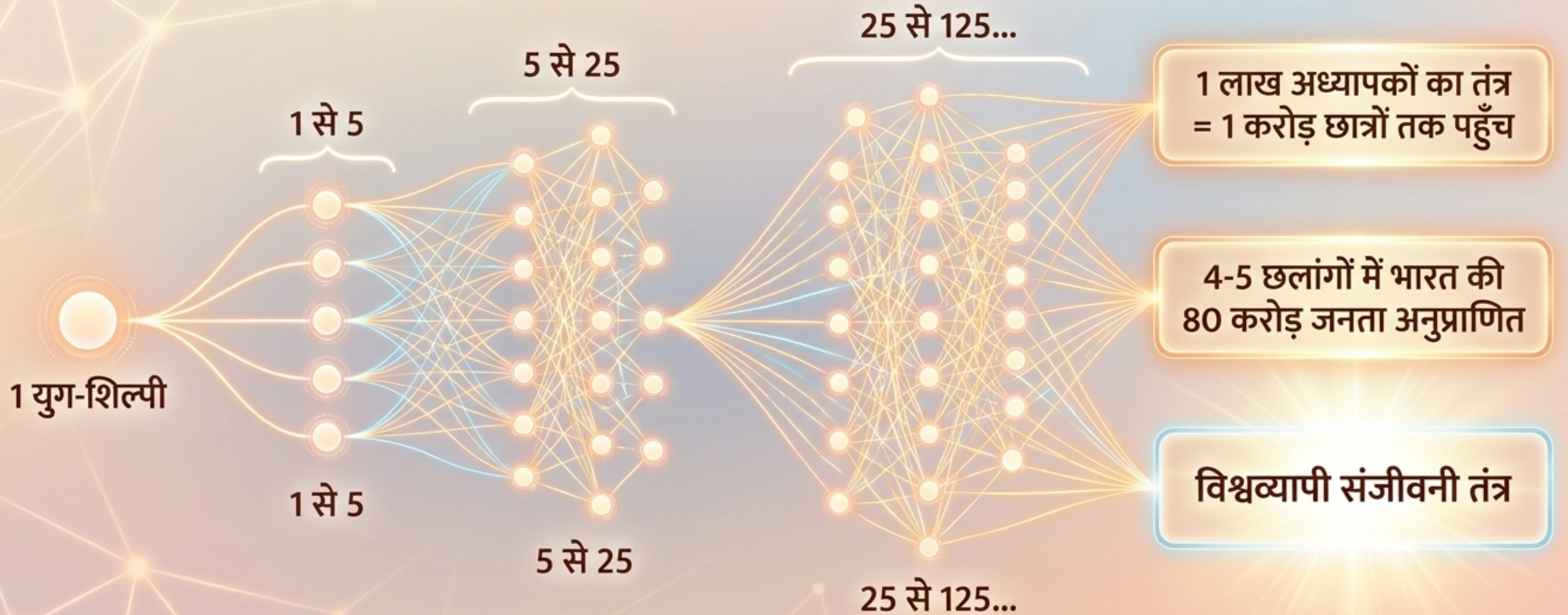
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

परिवार को पढ़ाएँ/सुनाएँ

शिक्षित सदस्यों को पढ़ने
दें, अशिक्षितों को
पढ़कर सुनाएँ।

The Neural Network of Light (प्रकाश का तंत्र)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

4-TOUR STRUCTURAL FUNNEL (24 घंटे टाम आतीत)



रोज कुआँ खोदने और रोज पानी पीने
वालों के पास भी नित्य 4 घंटे बच जाते हैं।
समय का अभाव नहीं,
केवल दिशा की आवश्यकता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

पेंशनर और वयोवृद्ध

55 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त। शेष 25+ वर्षों का स्वस्थ जीवन यदि युग-धर्म में लगे, तो एक नई सेना तैयार हो सकती है।



सम्पन्न वर्ग

ब्याज पर जीवन-यापन करने में सक्षम। यदि वे अपना अतिरिक्त समय और धन आदर्शों की ओर मोड़ें, तो असीम ऊर्जा प्राप्त होगी।



साधु व पुरोहित वर्ग

धर्म के आधार पर आजीविका। समाज का मार्गदर्शन इनका अनिवार्य कर्तव्य है— ‘नमक हलाल’ बनने का समय।



युग-अध्यापक



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वर्तमान स्थिति

प्रजनन के भार
से त्राहि-त्राहि

13% महिलाओं की
प्रसव-पीड़ा में मृत्यु

आधी जिन्दगी
रुग्णता में

नवजागरण का मार्ग

बच्चे उत्पन्न करने की
अंधी दौड़ से मुक्ति

समय और स्वास्थ्य
की बचत

परिणाम: दोनों (पति-पत्नी) मिलकर
ग्यारह (11 गुना) का कार्य करें।
महिला उत्कर्ष और क्रान्ति का नेतृत्व।

‘व्यस्तता’ का भ्रम

घिनौनी स्वार्थपरता
और शैतानी वृत्ति

बहाना गढ़ा हुआ है, केवल दूसरों
का हड़पने की हविस है।

संयम का मार्ग

महाकाल की
आवश्यकता की पूर्ति

यदि स्वार्थ को हटाया जा सके,
तो हर साधारण नर-नारी
एक युग-अध्यापक बन सकता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



अग्नि - समीपवर्ती
वातावरण को ऊर्जायुक्त
बनाती है।



गंगा - एक चट्टान से उतरकर
मीलों तक शीतलता का
विस्तार करती है।



सूर्य - धरती के हर कोने में
प्रकाश पहुँचाता है।

सच्ची विद्या (प्रज्ञा) का स्वभाव भी यही है। वह साक्षरता तक सीमित नहीं है, वह अपने इर्द-गिर्द के मलिन वातावरण को पूरी तरह बदल कर रख देती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

देवमानव

चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में
उत्कृष्ट आदर्शवादिता। नर-रत्नों का निर्माण
जो समाज को स्वर्गीय बनाएँगे।

संजीवनी विद्या का प्रवेश

क्रान्तिधर्मी साहित्य द्वारा दूरदर्शी
विवेकशीलता और ममतामयी सम्बेदना का जागरण।

मूर्च्छना और लिप्सा

वासना, तृष्णा और अहंकार के दलदल में फंसा
औसत आदमी। गन्दगी और सड़न।

जले दीपक ही बुझों को जलाएँगे

समस्या 600 करोड़ मानवों की है जिनका प्रवाह उल्टी दिशा में है।
नियन्ता की शक्ति इस विपन्नता में 'सहस्रदल कमल' खिलाने को तत्पर है।
जो जाग्रत हैं, उनका एकमात्र युग-धर्म है — ज्ञान-यज्ञ का माध्यम बनना
और संजीवनी विद्या को जन-जन तक पहुँचाना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)